15 इतिहास की शिक्षा से जुड़े मुद्दे : इंग्लैण्ड और अमेरिका के दृष्टिकोण

लिज़ डॉज़ दुरईसिंह



इस लेख में मैं इतिहास की शिक्षा को लेकर इंग्लैण्ड और अमेरिका में पहले से मौजूद व नए उभर रहे कुछ मुद्दों का चुनिन्दा विवरण प्रस्तुत कर रही हूँ। मैं यह भी समझाने की कोशिश करूँगी कि इन दोनों देशों की इतिहास पढ़ाने की पद्धतियाँ बहुत भिन्न क्यों हैं।

थोड़ी सी पृष्ठभूमि

अमेरिका में, जहाँ शिक्षा विकेन्द्रीत है, अलग–अलग राज्य इतिहास पढ़ाने के लिए अपने–अपने मानक और दिशा–निर्देश तय करते हैं; लेकिन, देशभर के शिक्षक सामान्यतः उन्हीं पाठ्यपुस्तकों का प्रयोग करते हैं जो बड़ी–बड़ी प्रकाशन कम्पनियों द्वारा प्रकाशित की जाती हैं। विद्यार्थियों को हाईस्कूल (14–18 वर्ष) के दौरान आमतौर पर अमेरिकी इतिहास और विश्व इतिहास, दोनों एक साथ पढ़ना पढ़ते हैं, हालाँकि अन्तिम वर्ष के दौरान इतिहास पढ़ना ऐच्छिक होता है। प्राथमिक और मिडिल स्कूलों में इतिहास सामान्यतः एक बृहत सामाजिक अध्ययन पाठ्यचर्या में सम्मिलित रहता है।

इंग्लैण्ड में, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 1988 से लागू है। यहाँ मैं सिर्फ इंग्लैण्ड की बात कर रही हूँ, क्योंकि इंग्लैण्ड, वेल्स और उत्तरी आयरलैण्ड में इतिहास की पाठ्यचर्या में अन्तर हैं; जबकि स्कॉटिश शिक्षा तंत्र काफी अलग है। 14 साल की उम्र तक अँग्रेज़ विद्यार्थी जिस अध्ययन कार्यक्रम का अनुसरण करते हैं उसमें इतिहास की विषयवस्तु, अवधारणाएँ और उनसे जुड़े कौशल, और साथ ही उनमें विद्यार्थियों की उपलब्धि के अपेक्षित स्तर निर्धारित रहते हैं। 14 साल की उम्र के बाद इतिहास पढ़ना अनिवार्य नहीं रह जाता; जो विद्यार्थी इतिहास की पढ़ाई जारी रखना चाहते हैं वे जीसीएसई और उच्च स्तरीय इतिहास पाठ्यक्रम चुनते हैं जो सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार काम करने वाले विभिन्न परीक्षा बोर्डों द्वारा संचालित किए जाते हैं।

किसका इतिहास? विषयवस्तु को लेकर विवाद

दुनियाभर में इतिहास, स्कूली पाठ्यचर्या का सर्वाधिक विवादित विषय होता है। क्योंकि इतिहास का राष्ट्रीय, नस्लीय, धार्मिक व राजनैतिक पहचान और सत्ता के साथ इतना अन्तरंग जुड़ाव होता है, कि अलग–अलग समूहों में अक्सर इस बात की प्रतिस्पर्धा मची रहती है कि इतिहास की स्कूली किताबों व पाठ्यचर्या में अतीत के उनके 'संस्करण' को स्थान मिले। भारत तो खुद भी हाल के वर्षों में इस तरह के संघर्षों से बच नहीं पाया है।

"राजनैतिक खींचतान के अलावा भी, विद्यार्थियों में राष्ट्रीय गौरव व देश के प्रति निजता की भावना को बढ़ावा देने के लिए अमेरिका में बिना किसी संकोच के इतिहास की शिक्षा का प्रयोग किया गया है; उदाहरण के लिए, जब अमेरिकी स्वतंत्रता संघर्ष की बात होती है तो अमेरिकी विद्यार्थी यही कहेंगे ''हम अँग्रेजों के कब्जे से आजादी चाहते थे'', भले ही उनका व्यक्तिगत पारिवारिक इतिहास जो भी हो।"

अमेरिका में, सामाजिक अध्ययन पाठ्यचर्या की समीक्षा को लेकर टैक्सस में हुए हालिया विवाद ने फिर यह बात साबित कर दी कि किस प्रकार इतिहास की शिक्षा इस देश में भिन्न–भिन्न राजनैतिक एजेंडों के लिए लड़ाई का अखाड़ा बनी हुई है। दाँव काफी बड़ा था क्योंकि टैक्सस का शिक्षा बजट अमेरिका के सबसे बड़े शिक्षा बजटों में से एक है; पाठ्यपुस्तक प्रकाशक सामान्यतः टैक्सस के पाठ्यचर्या की विशिष्टताओं का ध्यान रखते हैं जिनकी हर दस वर्ष बाद समीक्षा की जाती है। इस बार, रूढ़िवादी पक्ष के समर्थकों ने सफलतापूर्वक ऐसे संशोधनों के लिए दबाव बनाया जो अमेरिका के संस्थापक पूर्वजों के एक धर्मनिरपेक्ष सरकार बनाने के उद्देश्य को कमजोर करने वाले थे; उन्होंने अपने नायक रॉनल्ड रीगन के लिए भी पाठ्यक्रम में ज्यादा प्रतिष्ठित भूमिका सुनिश्चित करवा ली। इसके विपरीत, कहीं ज्यादा सकारात्मक रुख वाले अनुकरणीय लातिनी अमेरिकी व्यक्तियों को पाठ्यक्रम में शामिल करवाने के लिए अन्य समूहों के प्रयासों में अड़ंगा लगा दिया गया।

राजनैतिक खींचतान के अलावा भी, विद्यार्थियों में राष्ट्रीय गौरव व देश के प्रति निजता की भावना को बढ़ावा देने के लिए अमेरिका में बिना किसी संकोच के इतिहास की शिक्षा का प्रयोग किया गया है; उदाहरण के लिए, जब अमेरिकी स्वतंत्रता संघर्ष की बात होती है तो अमेरिकी विद्यार्थी यही कहेंगे ''हम अँग्रेजों के कब्जे से आजादी चाहते थे'', भले ही उनका व्यक्तिगत पारिवारिक इतिहास जो भी

हो। अमेरिकी पाठ्यपुस्तकों द्वारा कुल मिलाकर जो कहानी बताई जाती है वह अमेरिकी असाधारणता की, और उसके नागरिकों के लगातार बढ़ते हुए अधिकारों और स्वतंत्रताओं की होती है जिसकी पुष्टि के रूप में दास प्रथा के खात्मे और नागरिक अधिकार आन्दोलन का जिक्र किया जा सकता है। आज की इतिहास की पाठ्यपुस्तकें कम से कम ऐसे कई समूहों में से कुछ के दृष्टिकोणों को शामिल तो करती हैं जिन्हें एक समय अमेरिका के अतीत के आधिकारिक वर्णनों से बिलकुल ही अलग–थलग कर दिया गया था; फिर भी, पारम्परिक राष्ट्रीय आख्यान वैसे का वैसा ही है।

इंग्लैण्ड में पढ़ी जाने वाली इतिहास की विषयवस्तु काफी भिन्न प्रकार की है, हालाँकि विशेष रूप से 1980 के दशक के दौरान, दक्षिणपंथी सोच रखने वाले कई लोगों – जिनमें मार्गरेट थैचर भी शामिल थीं – ने जोरदार ढंग से यह तर्क सामने रखा कि विद्यार्थियों को ब्रिटिश इतिहास की घटनाओं और उसकी उपलब्धियों के सीधे–सटीक वर्णन का अध्ययन करना चाहिए। वर्तमान में, यह बहस फिर छिड़ गई है कि क्या स्कूलों में इस स्पष्ट उद्देश्य के साथ और ज्यादा ब्रिटिश इतिहास पढ़ाया जाना चाहिए कि विद्यार्थियों में ''बर्तानियत'' (जिसे ''अँग्रेजियत'' और ''वैल्शियत'' की तुलना में ज्यादा व्यापक माना जाता है) की और प्रगाढ़ भावना को प्रोत्साहन मिले। कई प्रख्यात इतिहासकारों ने सीधे तौर पर राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों की बजाय नाजी जर्मनी और अमेरिका की महामन्दी को दिए गए अपेक्षाकृत ज्यादा महत्व की आलोचना की है। उन्होंने पाठ्यचर्या के टुकड़ों–टुकड़ों में बँटे स्वरूप की भी आलोचना की है जो विद्यार्थियों को अतीत के बारे में एक सुसम्बद्ध और समग्र वृत्तान्त विकसित करने का मौका नहीं देती।

''अध्ययन–विधा'' के रूप में इतिहास बनाम ''विषयवस्तु'' के रूप में इतिहास: इतिहास को पढ़ाए जाने के ढंग के बारे में विवाद

इंग्लैण्ड में विद्यार्थियों के अपेक्षाकृत कम ब्रिटिश इतिहास पढ़ने की एक वजह यह है कि अतीत का अध्ययन करने का प्रमुख उद्देश्य देशभक्ति को बढ़ावा देना नहीं माना जाता। 1960 के दशक से आंग्ल शिक्षा विशेषज्ञों और शिक्षकों के बीच 'नया' इतिहास लोकप्रियता हासिल करने लगा। अगर संक्षेप में कहूँ तो 'नया' इतिहास, उस 'परम्परागत' इतिहास का जवाब था जो समालोचकों के मुताबिक विद्यार्थियों को सोचने के बजाय केवल याद करना या रटना सिखाता था। 'नए' इतिहास के हिमायतियों ने राष्ट्रीय राजनीति और सैनिक अभियानों के बजाय '(निचले स्तर से)' आम आदमी के इतिहास' पर कहीं ज्यादा जोर दिया; और वे लोग यह भी चाहते थे कि पाठ्यक्रम में और अधिक गैर–ब्रिटिश इतिहास का समावेश हो तथा घटनाओं के विभिन्न भागीदारों के दृष्टिकोणों पर भी और ज्यादा ध्यान दिया जाए। उन्होंने अतीत के कालक्रमानुसार विस्तृत फैले दौरों के अध्ययन की बजाय इतिहास के किन्ही खास प्रसंगों और लम्हों का गहराई से अध्ययन करने की वकालत की। 1972 में शुरू किया गया स्कूल्स हिस्ट्री प्रॉजेक्ट (एसएचपी) 'नए' इतिहास के तरीके का एक प्रमुख समर्थक था और इसकी पाठ्यचर्याएँ शिक्षकों के बीच (जो कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के लागू होने से पहले अपना खुद का पाठ्यक्रम चुनने के लिए स्वतंत्र थे) खासी लोकप्रिय थीं; आज के वक्त की बात करें तो एसएचपी अभी भी प्रभावशाली है, खासतौर पर इसलिए क्योंकि, दक्षिणपंथी सोच वाले लोगों के प्रचण्ड विरोध के बावजूद भी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में 'नए' इतिहास के कई पहलुओं को शामिल किया गया है।

हालाँकि इंग्लैण्ड में, इतिहास पढ़ाने को लेकर 'नई' और 'परम्परागत' पद्धतियों के बारे में होने वाली बहसें सामान्यतः राजनैतिक दृष्टियों के अनुरूप ही चलती रही हैं, पर 'नया' इतिहास अनिवार्य रूप से वामपंथी या जनवादी एजेंडे को बढ़ावा देने के लिए नहीं है। बल्कि, उसका सरोकार इतिहास को ठोस और बंजर तथ्यों का संग्रह बना देने के बजाय उसे दुनिया के बारे में एक गतिशील अध्ययनविधा या जानने के ढंग के रूप में देखने से है। अतीत को समझने के लिए, विद्यार्थियों को इतिहासकारों की तरह से सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता हैः ऐतिहासिक साक्ष्यों का विश्लेषण करना; विभिन्न ऐतिहासिक विवेचनाओं पर विचार करना; कोई चीज क्यों बदली या फिर वैसी की वैसी क्यों रही, इसे लेकर अपने तर्क तैयार करना; और/या किन्ही खास घटनाओं या परिवर्तनों के महत्व पर विचार करना। इस बात पर गौर करना जरूरी है कि अतीत के बारे में ठोस ज्ञान – या 'विषयवस्तु'. अध्ययन–विधा की तरह इतिहास की समझ विकसित करने के लिए बेहद आवश्यक होता है; परन्तु मात्र यही इतिहास का आदि और अन्त नहीं होता। जहाँ कुछ समालोचकों ने बाल इतिहासकार बनाने की कोशिश करने के विचार की जमकर आलोचना की है क्योंकि अधिकाँश विद्यार्थी पेशेवर रूप से इतिहासकार नहीं बनेंगे, वहीं कुछ दूसरों ने यह तर्क दिया है कि अतीत के बारे में समीक्षात्मक ढंग से सोचना सीखना और यह कि हम इसके बारे में कैसे जानते हैं, सभी विद्यार्थियों के लिए मूल्यवान साबित होता है। निश्चित ही, इतिहास को एक अध्ययन–विधा के रूप में पढ़ाने की आकांक्षा पश्चिम के ऐसे कई प्रख्यात शिक्षकों व शिक्षाशास्त्रियों की उस अपील के अनुरूप है जिसमें इन लोगों ने बच्चों में स्कूली पाठ्यचर्या के सभी पहलुओं की गहरी समझ विकसित करने के लिए पढ़ाने की बात कही थी।

> *हालाँकि इंग्लैण्ड में, इतिहास पढ़ाने को लेकर 'नई' और 'परम्परागत' पद्धतियों के बारे में होने वाली बहसें सामान्यतः राजनैतिक दृष्टियों के अनुरूप ही चलती रही हैं, पर 'नया' इतिहास अनिवार्य रूप से वामपंथी या जनवादी एजेंडे को बढ़ावा देने के लिए नहीं है। बल्कि, उसका सरोकार इतिहास को ठोस और बंजर तथ्यों का संग्रह बना देने के बजाय उसे दुनिया के बारे में एक गतिशील अध्ययनविधा या जानने के ढंग के रूप में देखने से है।*

हालाँकि, इतिहास को एक अध्ययन–विधा के रूप में पढ़ाने का विचार धीरे–धीरे अमेरिका में भी थोड़ी पैठ बनाने लगा है (और कुछ कक्षाओं में तो यह विचार वर्षों से मौजूद है), अधिकांश शिक्षक व प्रशासक इतिहास शिक्षा के लिए अभी भी पाठ्यपुस्तक का पूर्णरूपेण अनुसरण करने के 'परम्परागत' तरीके को ही अपनाए जा रहे हैं। उत्तरी अमेरिका के प्रख्यात इतिहास शिक्षा विशेषज्ञ – जैसे सैम वाइनबर्ग (अमेरिका) और पीटर सीक्सज़ (कनाडा) – इतिहास शिक्षा के लिए 'पूछताछ–आधारित' या अध्ययन–विधा रूपी पद्धति अपनाने की वकालत करते हुए यह तर्क देते हैं कि यह पद्धति इतिहास की परिष्कृत समझ विकसित करने में विद्यार्थियों को समर्थ बनाती है और साथ ही उनमें इतिहास के प्रति एक गहरी दिलचस्पी भी पैदा करती है। अँग्रेज शोधकर्ताओं (उदाहरण के लिए, पीटर ली, डैनिस शैमिल्ट और रॉस ऐशबाई) के समानान्तर किए गए उनके शोधकार्य में इस बात को भी रेखांकित किया गया है कि इतिहास को लेकर विद्यार्थी की सोच अक्सर सहजज्ञान के उलट होती है और इतिहास के बारे में सशक्त और फलप्रद विचार विकसित करने के लिए विद्यार्थियों को सहयोग देने के साथ–साथ इसे उनके समक्ष एक चुनौती के रूप में रखा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, शुरुआत में कई विद्यार्थी मानते हैं कि इतिहास तो पहले से ही 'बना–बनाया' होता है और उसे ऐतिहासिक स्रोतों से निर्मित करने की कोई जरूरत नहीं होती या, कि घटनाओं के घटने के पीछे बस ऐतिहासिक पात्रों की वैसा करने की इच्छा होती है: अध्ययन–विधा के रूप में इतिहास पढ़ाना आसान काम नहीं है।

आगे की ओर देखना: इतिहास की शिक्षा से जुड़े उभरते विचार

मीडिया में अक्सर यह बताया जाता है कि सालों की इतिहास शिक्षा के बावजूद अमेरिकी और इंग्लिश विद्यार्थी अतीत के बारे में बहुत कम जानते हैं। हालाँकि इस तरह की चिन्ताएँ दशकों पुरानी हैं और बड़े सरलीकृत ढंग से गढ़ ली जाती हैं, लेकिन कुछ तो है जो गड़बड़ कहा जा सकता है। इंग्लैण्ड में, चिन्ता यह है कि विद्यार्थी अतीत की एक सुसम्बद्ध तस्वीर नहीं गढ़ पाते क्योंकि वे ऐतिहासिक सोच के अपने 'कौशलों' को इधर–उधर बिखरे प्रसंगों पर लगाए रहने में ही बहुत व्यस्त रहते हैं। अमेरिका में, जहाँ तथ्यों का कालक्रम में अध्ययन करने पर ज्यादा जोर दिया जाता है, विद्यार्थी उन बातों–तथ्यों को सीखने–समझने और आत्मसात करने में असमर्थ – या उदासीन – मालूम पड़ते हैं जो उन्हें पढ़ाया जा चुका होता है।

हाल में, इतिहास को एक अध्ययन–विधा के रूप में पढ़ाने के विचार की पुनर्कल्पना किए जाने के उपाय के तौर पर ''ऐतिहासिक चेतना'' की अवधारणा में दिलचस्पी बढ़ी है। ऐतिहासिक चेतना मोटे तौर पर इस बात को इंगित करती है कि मनुष्यों के रूप में हम किस तरह खुद को समय में स्थित करते हैं और किस तरह अपनी जिन्दगी को अतीत और भविष्य के साथ जोड़ते हैं; इसका प्रयोजन यह समझने के लिए अतीत का उपयोग करना है कि हम लोग कौन हैं और हम कैसी जिन्दगी जी रहे हैं तथा किस तरह जीने की अपेक्षा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, पीटर ली जैसे विशेषज्ञ वर्तमान में 'उपयोगी ऐतिहासिक रूपरेखाओं' को विकसित करने में दिलचस्पी ले रहे हैं जो अतीत के बारे में विद्यार्थियों की समझ को गढ़ने में मदद करेंगी; ये रूपरेखाएँ नए ज्ञान का समावेश करने और उसे संगठित करने में विद्यार्थियों की मदद करेंगी लेकिन यह प्रक्रिया 'परम्परागत' शिक्षा के गैरलचीले या हठधर्मी तरीके से अलग होगी। ऐसी रूपरेखाएँ, जो पूरी मनुष्य जाति के इतिहास को समाहित करेंगी, शुरुआत में तेजी से पढ़ाई जाएँगी, पर विद्यार्थियों के इस विधा के ज्ञान के ज्यादा परिष्कृत होते जाने के साथ उनकी लगातार समीक्षा की जाती रहेगी और उसे समय व परिस्थिति के अनुकूल ढाला जाता रहेगा। विद्यार्थियों को वर्तमान व अतीत के बीच सम्बन्ध बनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाएगा।

इतिहास की शिक्षा में हुए कई सुधार व परिवर्तन शोध के परिणामस्वरूप हुए हैं। लेकिन, क्या पढ़ाया जाना चाहिए और कैसे पढ़ाया जाना चाहिए, इसको लेकर होने वाले कई निर्णय इस बड़े सवाल पर लाकर खड़ा कर देते हैं कि इतिहास पढ़ाया क्यों जाना चाहिए? उदाहरण के लिए, यह जाहिर सी बात है कि वे लोग, जो यह मानते हैं कि इतिहास पढ़ाने का सबसे महत्वपूर्ण कारण युवा लोगों को अपने राष्ट्र के अतीत के बारे में गर्व महसूस करवाना है वे पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु और उसे पढ़ाने के ढंग के बारे में अलग विचार रखते होंगे। बजाय उन लोगों के जिनको ज्यादा चिन्ता

इतिहास के बारे में विद्यार्थियों की इस विधा की समझ को लेकर रहती है। जिसमें इन बातों का शुमार भी रहता है कि अतीत के बारे में हमें जानकारी ही कैसे होती है, और क्यों एक ही घटना के अलग–अलग अर्थ हो सकते हैं। इसके अलावा, उन शिक्षकों की पद्धतियाँ थोड़ी और अलग होगी जिनका प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों की यह समझने में मदद करना होता है कि मानव इतिहास की बड़ी तस्वीर में स्वयं उन लोगों की जगह कहाँ बनती है। और किस तरह वे अतीत का इस्तेमाल अपनी खुद की जिन्दगी को सार्थक दिशा देने के लिए कर सकते हैं। निश्चित ही, इतिहास की शिक्षा के अन्य सम्भावित उद्देश्य भी हैं जिनका यहाँ मैंने जिक्र नहीं किया है। जैसे कि विद्यार्थियों को नैतिक या धार्मिक पाठ पढ़ाना, और/या उनको राजनैतिक या सामाजिक रूप से सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करना; लेकिन फिर, इन बातों को प्राथमिकताएँ मानने से पढ़ाने की पद्धति प्रभावित होगी। यह देखते हुए कि इतिहास की शिक्षा का उद्देश्य अपनी–अपनी समझ की बात है, इतिहास की शिक्षा को लेकर बहसें सम्भवत : बहुत लम्बे समय तक चलती रहेंगी – और ऐसा सिर्फ अमेरिका और इंग्लैण्ड में ही नहीं होगा।

कुछ प्रस्तावित स्रोत

1. बैंचमार्क्स ऑफ हिस्टॉरिकल थिंकिंग वैबसाइट, सेन्टर फॉर द स्टडी ऑफ हिस्टॉरिकल कॉन्शसनैस, कनाडा : http://www.histori.ca/benchmarks/
2. इंग्लिश नेशनल करीकुलमः http://curriculum.qcda.gov.uk/key-stages-3-and-4/subjects/key-stage-3/history/index.aspx
3. हिस्ट्री थिंकिंग मैटर्स, रिसोर्सेज़ फॉर हिस्ट्री टीचर्स : http://historicalthinkingmatters.org/

लिज़ डॉज़ दुरईसिंह *हार्वर्ड ग्रैजुएट स्कूल ऑफ ऐजुकेशन से पीएचडी कर रही हैं। उनके शोध का विषय है कि 'युवा लोग अपने बारे में सोचने के लिए इतिहास का उपयोग किस तरह करते हैं।' उन्होंने इससे पहले इंग्लैण्ड और ऑस्ट्रेलिया में इतिहास पढ़ाया है।*